संवाद

नए साल का पहला अंक आपके सामने है। नया साल अपने साथ लेकर आता है नए-नए सपने, नयी उम्मीदें, नयी आशाएँ। नए साल के आते ही हम सभी नए-नए संकल्प लेने लगते हैं। बालिकाएँ भी नए साल के आगमन पर अनेक सपने सँजोती हैं और संकल्प लेती हैं – कुछ कर दिखाने का, आगे बढ़ने का।

मासूम आँखों में अनगिनत सपने लिए बालिकाएँ विद्यालय में कदम रखती हैं, होठों में मुस्कान लिए विद्यालय की हर गतिविधि में बढ़-चढ़कर उत्साह के साथ भाग लेती हैं। वे पढ़ना चाहती हैं, आगे बढ़ना चाहती हैं। लेकिन कई बार सामाजिक कुरीतियों, तो कभी घर और बाहर समान अवसर नहीं मिलने के कारण संकल्प पूरे नहीं हो पाते। कभी इनकी खुशियों को घर में ही ग्रहण लग जाता है तो कभी समाज में। आँखों में तैरते सपने कहीं डूब से जाते हैं।

सर्व शिक्षा अभियान के तहत बालिका शिक्षा की दिशा में अनेक प्रयास किए गए, अनेक योजनाएँ भी चलायी गईं। शिक्षा का अधिकार कानून 2009 भी हर बच्चे को विद्यालयी शिक्षा पाने का अधिकार देता है। लेकिन यह अधिकार सही मायनों में तभी सार्थक हो सकता है जब हर लड़की विद्यालय में दाखिल हो, वहाँ की सभी गतिविधियों में समान रूप से भाग ले और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे। इसमें शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक ही बच्चों में जेंडर आधारित पूर्वाग्रहों को दूर कर बचपन से उनमें जेंडर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं। बचपन से ही लड़कों में जेंडर के मुद्दे के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित हो, तो वे घर और बाहर दोनों ही स्थानों पर लड़कियों को सम्मान की दृष्टि से देखेंगे। बड़े होकर अपनी सहपाठी, बहन और पत्नी को भी जीवन में आगे बढ़ने के अवसर देने के लिए हर कदम पर उनका साथ देंगे। शिक्षक विद्यालय की हर गतिविधि में लड़कियों को समान रूप से भाग लेने का अवसर देकर उनमें आत्मविश्वास जगाकर, आगे बढ़कर कुछ कर दिखाने का जज़्बा पैदा कर सकते हैं।

आइए, इस नए साल में हम सभी संकल्प लें — बालिकाओं के संकल्पों को पूरा करने में उनका साथ देने का। इस संकल्प पर हमें अडिग रहना है। हर बच्ची के संकल्प को पूरा करने में हम सहयोग दे सकते हैं, उसे अच्छी शिक्षा देकर तथा अपने प्यार और सम्मानमयी छाँव में जीने का अधिकार देकर।

अकादमिक संपादक